हीरे का राजकुमार

सरल रोचक और सचित्र बालपोथी

लेखक : चित्रांकन

मंदाकिनी



हीरे का राजकुमार

सरल, रोचक और सचित्र बालपोथी



लेखन–चित्रांकन
मंदाकिनी

सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन



•

ISBN 978-81-7309-190-2

•

प्रकाशक

सस्ता साहित्य मण्डल

एन–77, पहली मंजिल, कनॉट सर्कस, नई दिल्ली–110001

शाखा : 126, जीरो रोड, इलाहाबाद–211003

फोन : 0532–2400034

•

संस्करण : 2012

प्रतियां : 1100

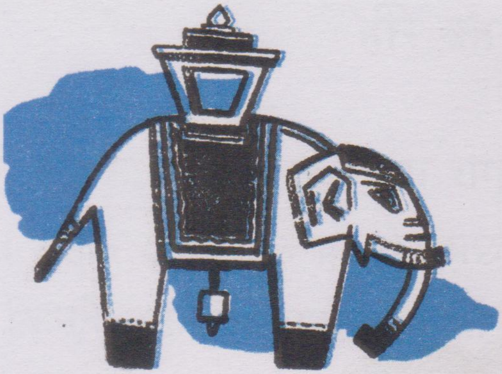
मूल्य : रु. 35.00

•

मुद्रक

क्विक ऑफसेट

जौहरीपुर, दिल्ली–110094



बालकों से

इस पुस्तक में एक राजकुमार की कहानी दी गई है। इसे पढ़कर तुम्हें बड़ा आनंद आयगा। कहानी इतनी अच्छी लगेगी कि तुम अपने भाई-बहनों और संगी-साथियों को भी पढ़वाओगे। ऐसी दो किताबें हम पहले भी निकाल चुके हैं—

1. बिम्बी की कहानी 2. खूब मिले!

आगे और भी कई किताबें निकलेंगी। तुम सबको पढ़ना। पढ़कर हमें लिखना, कैसी लगीं।

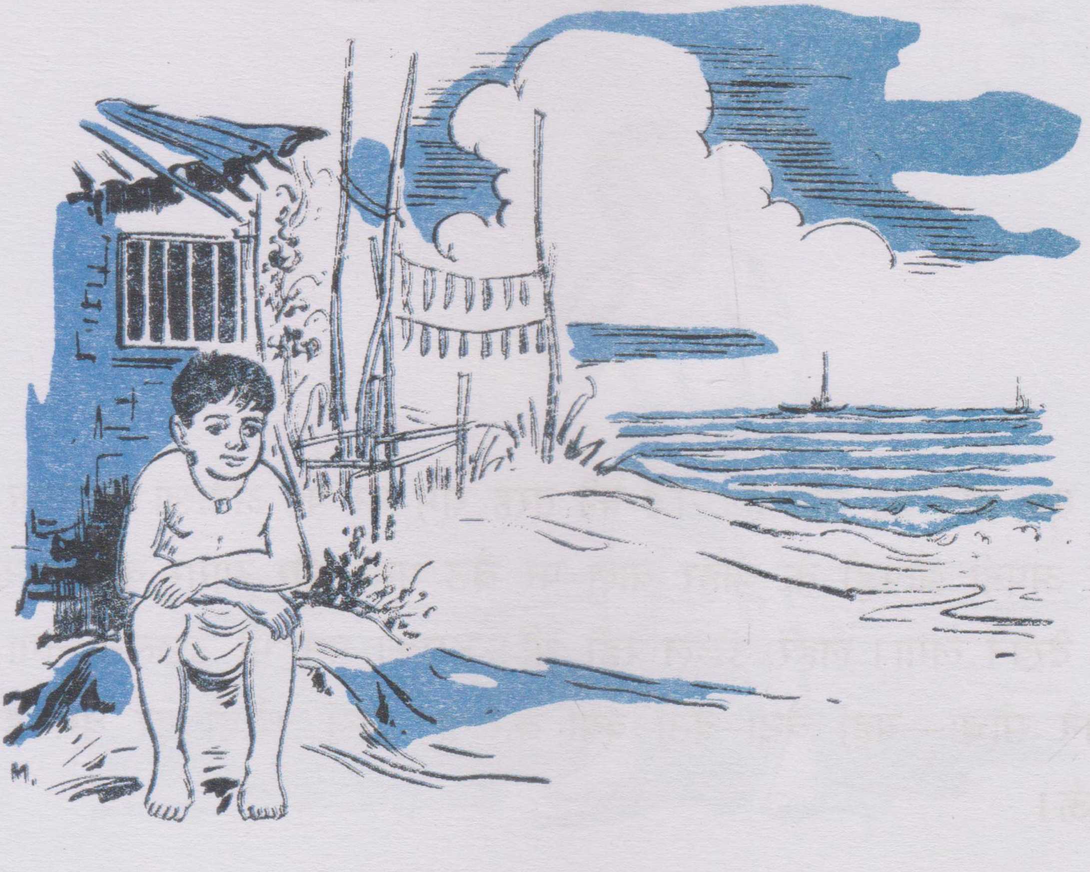
—सम्पादक

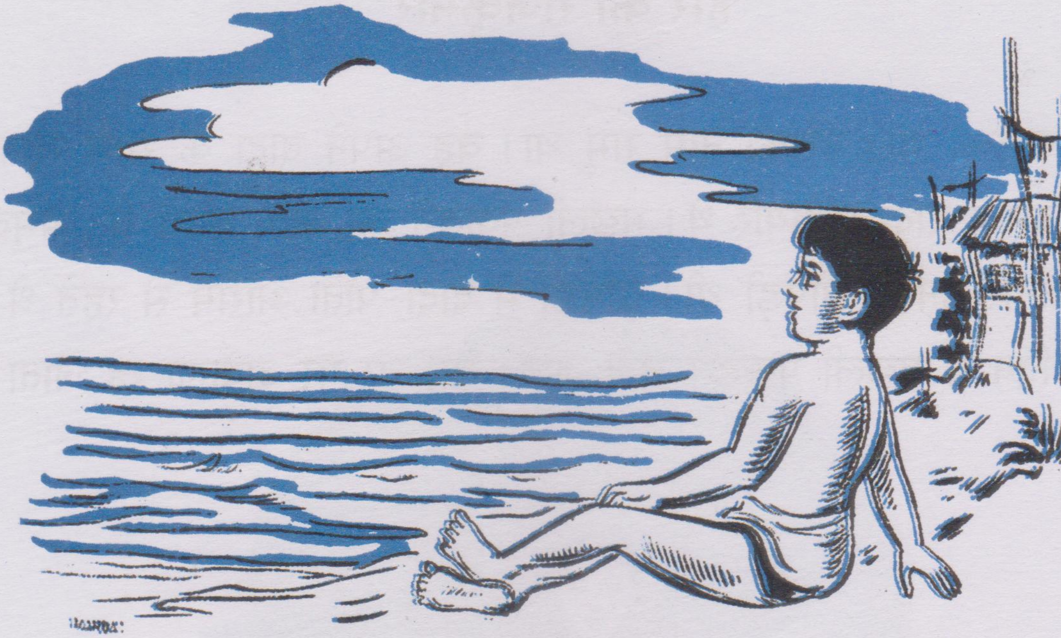




हीरे का राजकुमार

एक लड़का था। उसका नाम रामू था। वह अपने दादा के साथ रहता था। उसके दादा मछियारे थे। मछली पकड़ने का काम करते थे। समुद्र के किनारे उनकी झोंपड़ी थी। झोंपड़ी में दादा-पोता आराम से रहते थे। दादा दिन में मछली पकड़ने चले जाते। रामू घर पर अकेला रह जाता।





एक दिन की बात है। रोज की तरह रामू घर पर अकेला रह गया। वह अपनी झोंपड़ी के बाहर बालू पर बैठ गया और सागर की लहरों को देखने लगा। लहरें उछल रही थीं। उसका मन भी उछलने लगा। उसने सोचा—यहां बैठा-बैठा क्या करूंगा! चलूं, थोड़ी दूर घूम ही आऊं।



वह उठ खड़ा हुआ और समुद्र के किनारे घूमने लगा। सूरज की किरणें बालू पर पड़ रही थीं। बालू रामू को अच्छी लगी। सागर की लहरें चमक रही थीं। एक-दूसरे से टकराकर खेल रही थीं। रामू को वे भी

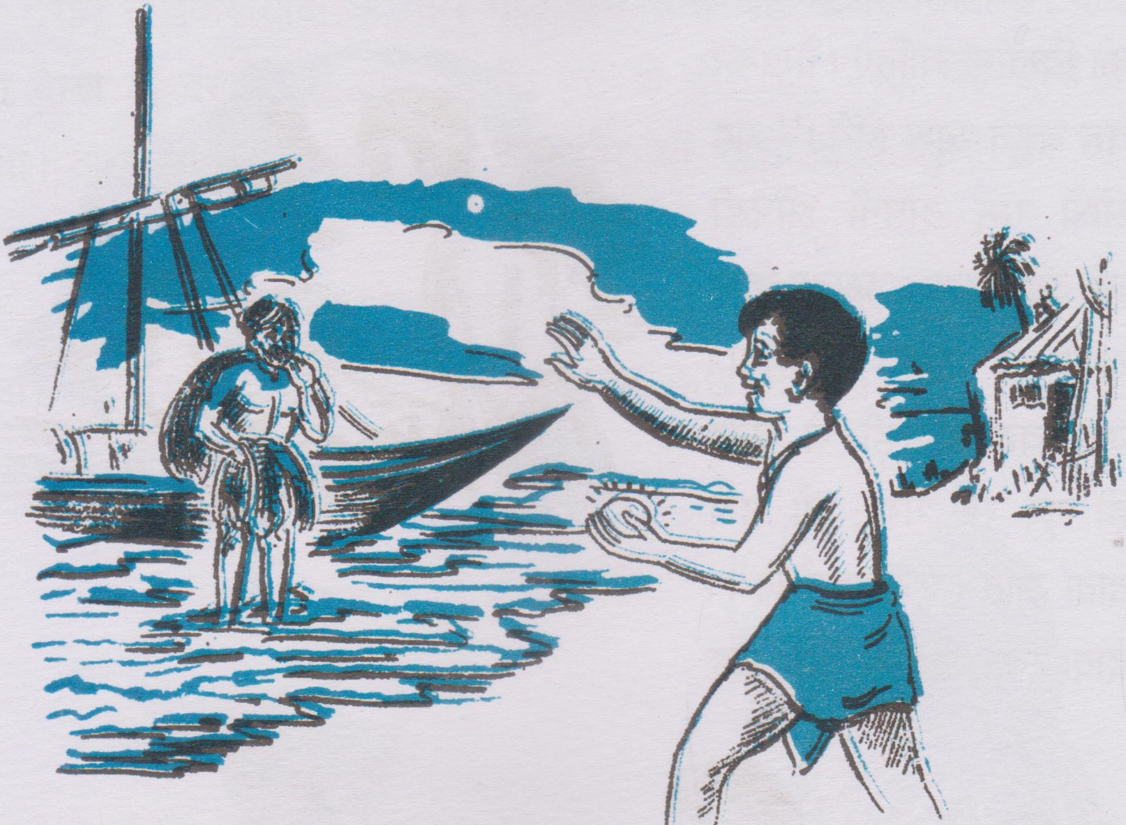


अच्छी लगीं। उन्हें देखते-देखते वह दूर निकल गया।

थोड़ा और आगे बढ़ने पर अचानक ठिठककर खड़ा हो गया। अरे, यह सामने बालू पर क्या पड़ा है! कोई चमकती चीज थी। रामू ने सोचा—यह है क्या? यहां कहां से आई? वह खड़ा-खड़ा देखता रहा। उसे लगा, इसे लहरें यहां छोड़ गई होंगी।

रामू ने उसे हाथ में उठा लिया। वह एक पत्थर था। रामू ने उसे

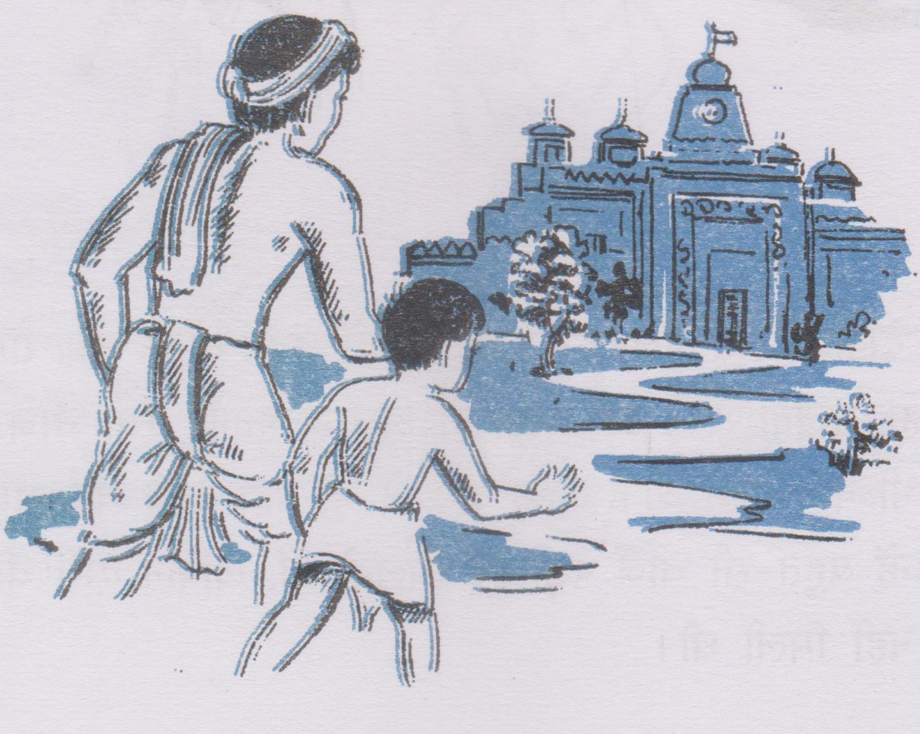




ध्यान से देखा। उलट-पलटकर देखा। उसमें बड़ी चमक थी। रामू उसे देखता रहा, देखता रहा। उसे बहुत ही अचरज हुआ। ऐसी चीज उसने पहले कभी नहीं देखी थी। उसके दादा ने भी नहीं देखी थी। समुद्र के किनारे उन्हें बहुत-सी चीजें पड़ी हुई मिलती थीं, लेकिन ऐसी चीज तो अबतक नहीं मिली थी।

"इसे झटपट मुझे दादा को दिखाना चाहिए। देखकर वह बहुत खुश होंगे।" यह सोच रामू अपनी झोंपड़ी की ओर चला। उसका दिल खुशी से उछल रहा था। जब वह झोंपड़ी से कुछ ही दूर रह गया; तो उसे दादा आते हुए दिखाई दिये। दादा को देखते ही वह





चिल्लाया, "दादा, ओ दादा!" दादा ने उसकी ओर देखा।

रामू दौड़कर दादा के पास गया और उन्हें वह पत्थर दिखाया। दादा ने देखा तो देखते रह गए, "अरे, यह तो हीरा है!" हां, वह हीरा ही था। दादा से यह सुनकर रामू को और भी खुशी हुई। खुशी की बात जो थी।

उस दिन दादा के हाथ एक भी मछली नहीं पड़ी थी। उनके पास अपना और रामू का पेट भरने के लिए कुछ भी नहीं था।



हीरा पाकर उन्होंने सोचा—इसे राजा को देना चाहिए। राजा खुश होंगे, उन्हें इनाम देंगे। ऐसा कीमती हीरा तो राजा के पास भी नहीं होगा। सो रामू को साथ लेकर राजा के महल की ओर चले।

महल में जाकर वे राजा से मिले और उसे वह हीरा दिया। राजा चकित रह गया। ऐसा हीरा उसने पहले कभी नहीं देखा था। उसके खजाने में बहुत-से हीरे थे, लेकिन ऐसा तो एक भी नहीं था। राजा आंखें

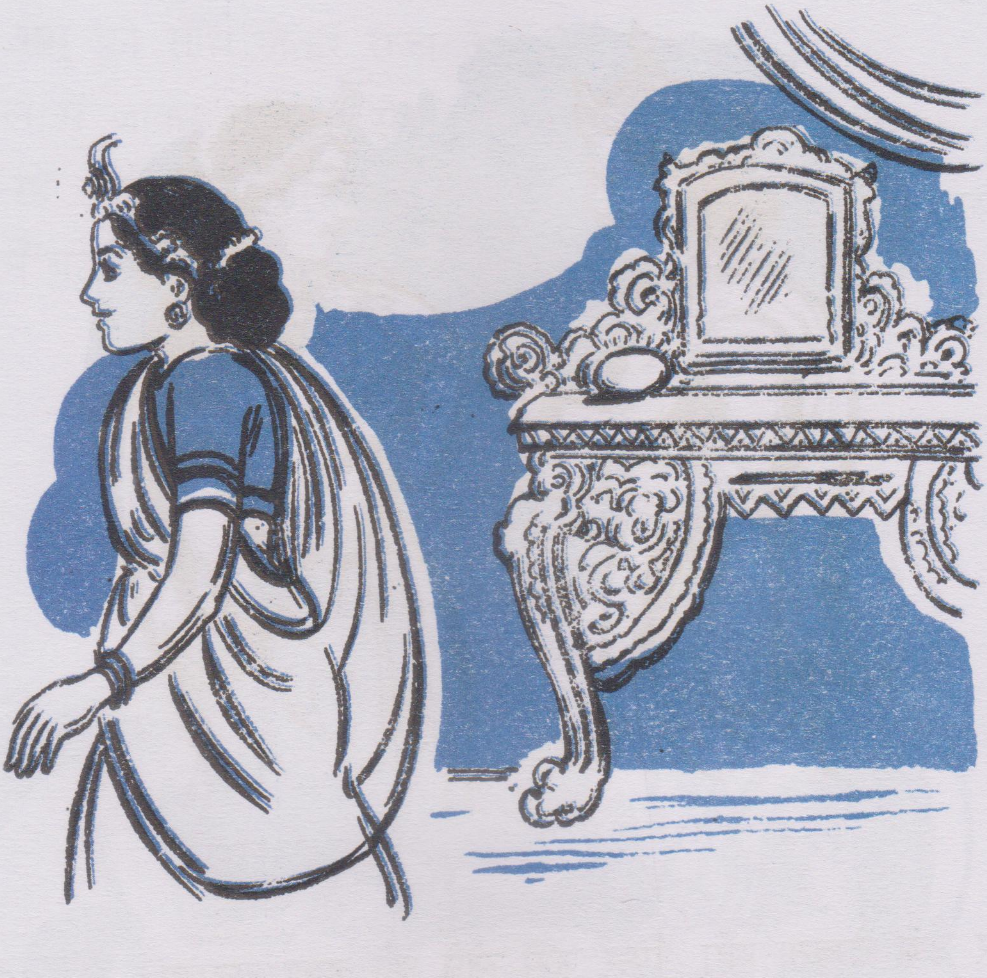




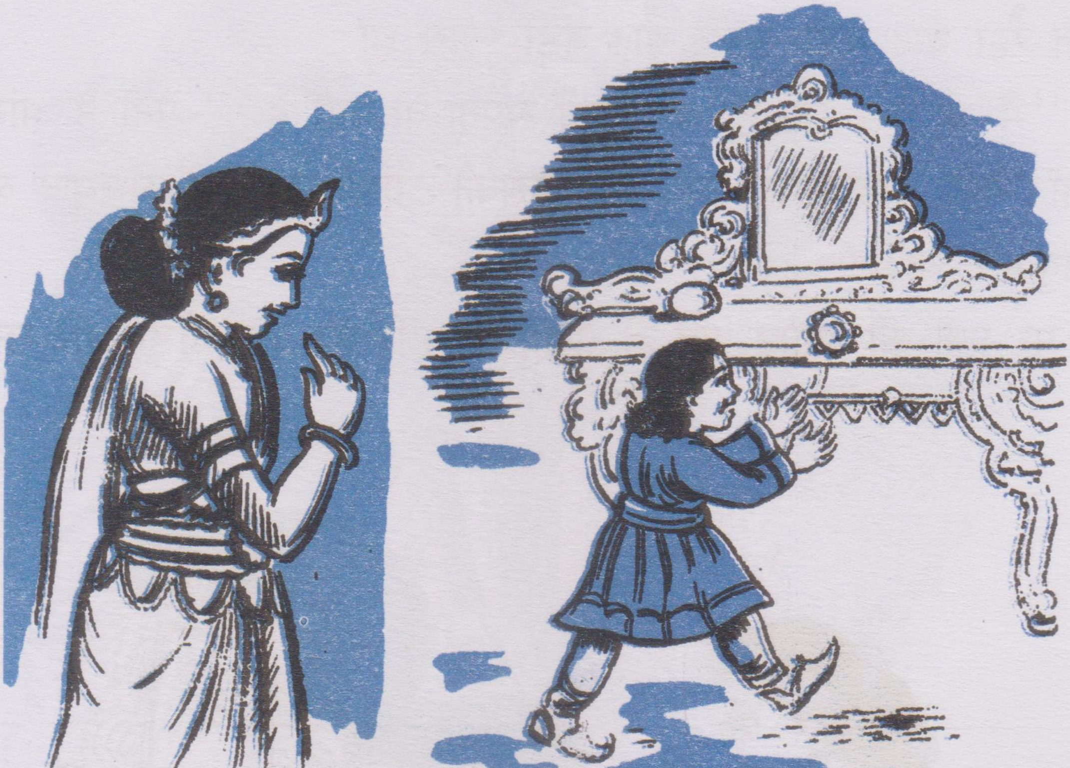
फाड़कर उसे देखता रहा, फिर उसे लेने को हाथ बढ़ाया।

राजा ने हीरा अपने हाथ में ले लिया। उसे बड़ा हर्ष हुआ। ''इन लोगों ने कितनी बढ़िया चीज लाकर दी है! मुझे इनको इनाम देना चाहिए।'' राजा ने बहुत-से रुपये थैली में भरवाकर खजाने से मंगवाये और उन्हें वह थैली इनाम में दी।

इनाम पाकर दादा बहुत प्रसन्न हुए। रामू को भी बड़ी खुशी हुई।



राजा हीरे को लेकर अपनी रानी के पास गया। राजा बड़ा अच्छा था। उसकी प्रजा उसे बहुत प्यार करती थी। प्रजा अपनी रानी को भी बहुत चाहती थी। राजा-रानी को किसी बात की कमी न थी। बस, एक दुःख था। उनके कोई सन्तान न थी। वे सोचा करते थे—उनके बाद गद्दी पर कौन बैठेगा!



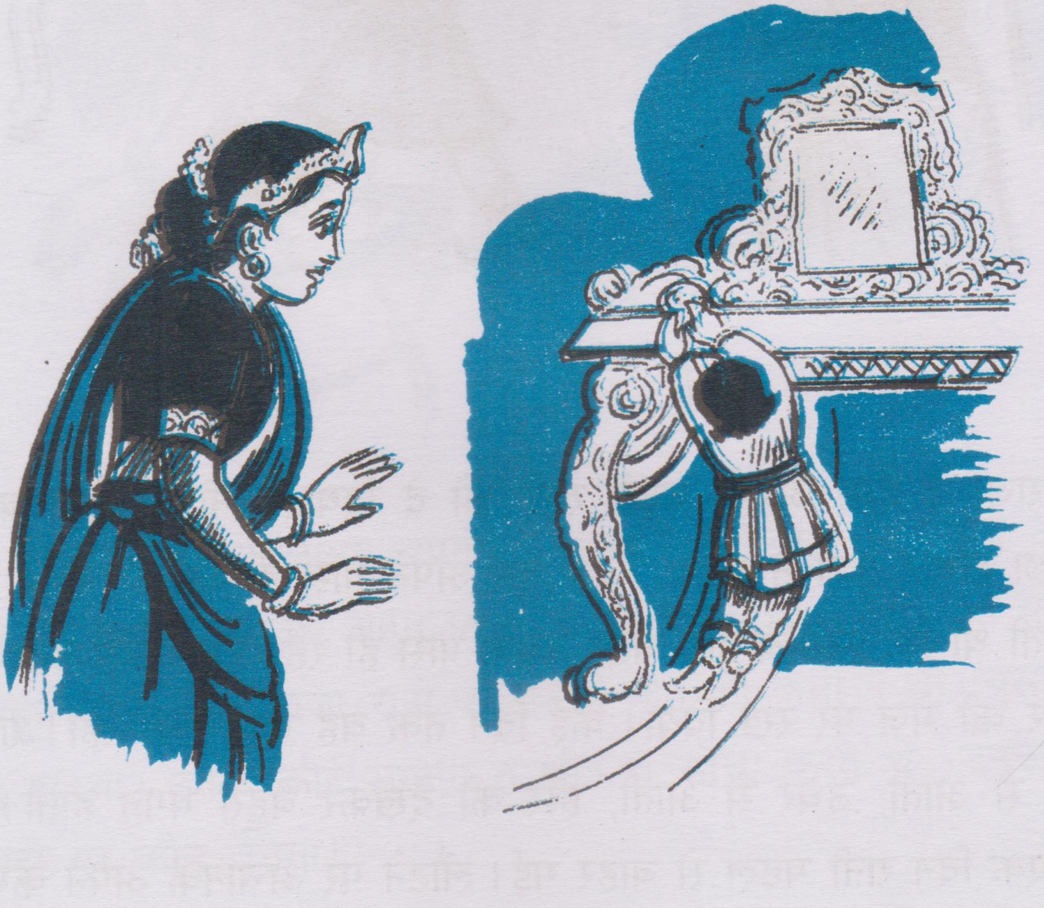
राजा ने हीरा अपनी प्यारी रानी को दे दिया। रानी को वह बड़ा अच्छा लगा। राजा ने कहा, "इसे तुम अपने पास ही रखो।" रानी भी चाहती थी कि ऐसी बढ़िया चीज उसके पास ही रहे। उसने उसे उठाकर शृंगार की मेज पर रख दिया। कई दिन तक वह वहीं रखा रहा। रानी इधर से आती, उधर से आती, हीरे को देखकर बहुत मगन होती।

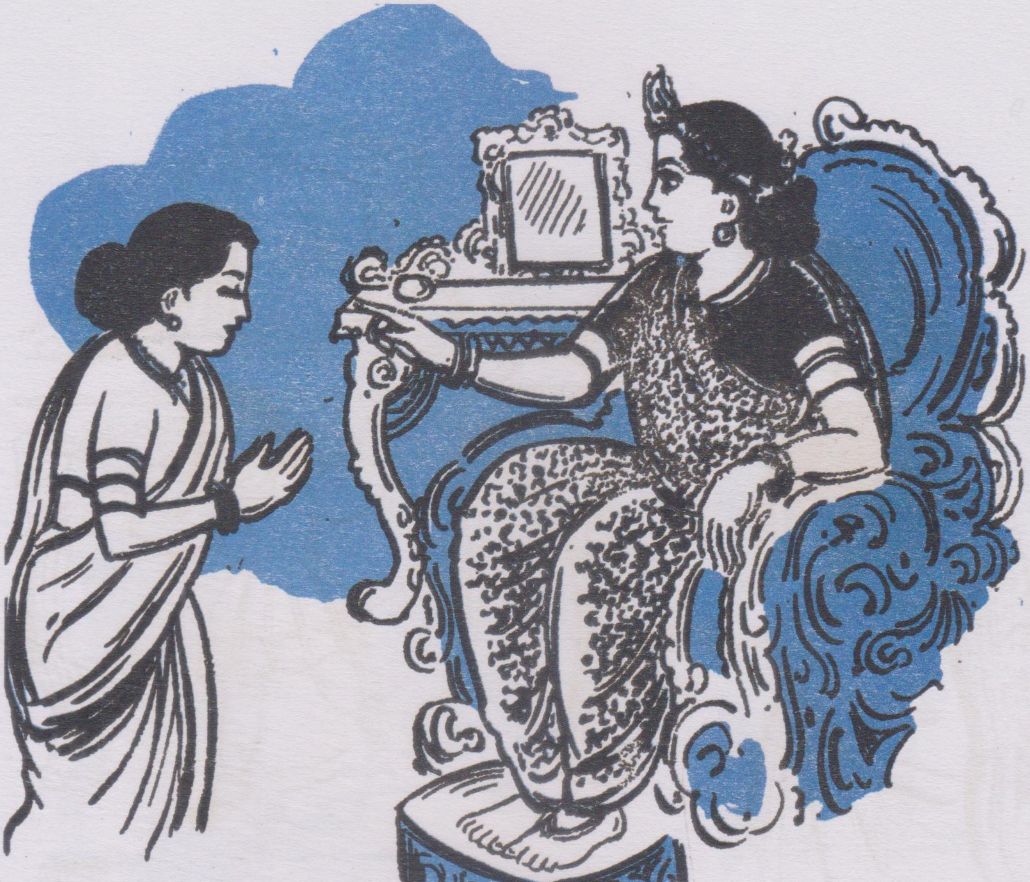
एक दिन रानी महल से बाहर गई। लौटने पर अचानक अपने कमरे

में घुसी तो उसे अपनी आंखों पर विश्वास न हुआ। वहां एक राजकुमार खेल रहा था। बड़ा सुन्दर था। बड़ा प्यारा था।

"मैं जो देख रही हूं, वह कहीं सपना तो नहीं है?" रानी ने आंखें मलीं। नहीं, वह सपना नहीं था। उसकी आंखों के आगे सचमुच का राजकुमार था।

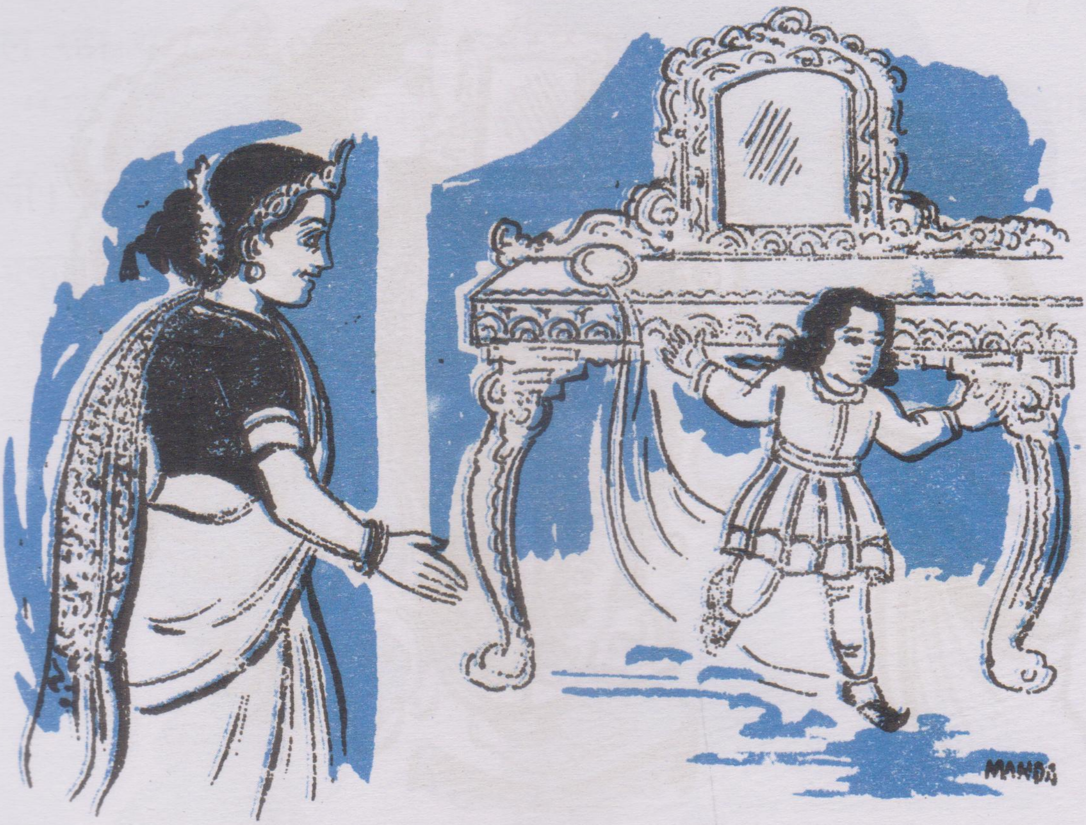
पर रानी की आहट पाते ही राजकुमार हीरे की ओर दौड़ा और रानी





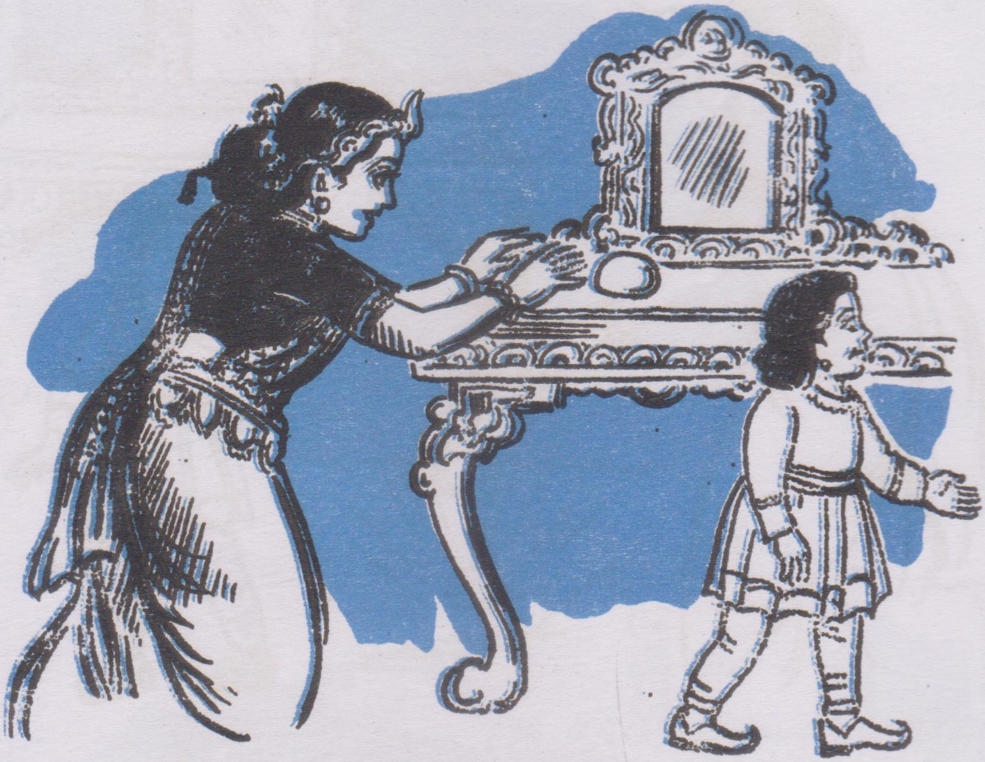
के देखते-देखते हीरे में समा गया। रानी को बड़ा ताज्जुब हुआ। दुःख भी हुआ। हाय, इतना प्यारा राजकुमार कहां गया! इतनी मुश्किल से तो उसका मुंह देखने को मिला था। वह एकटक राजकुमार को देख रही थी। लेकिन अचरज और दुःख के मारे जैसे उसे कुछ दिखाई ही नहीं दे रहा था।

राजकुमार गायब हो गया। रानी ने उसे सारे कमरे में ढूंढ़ा, पर उसका



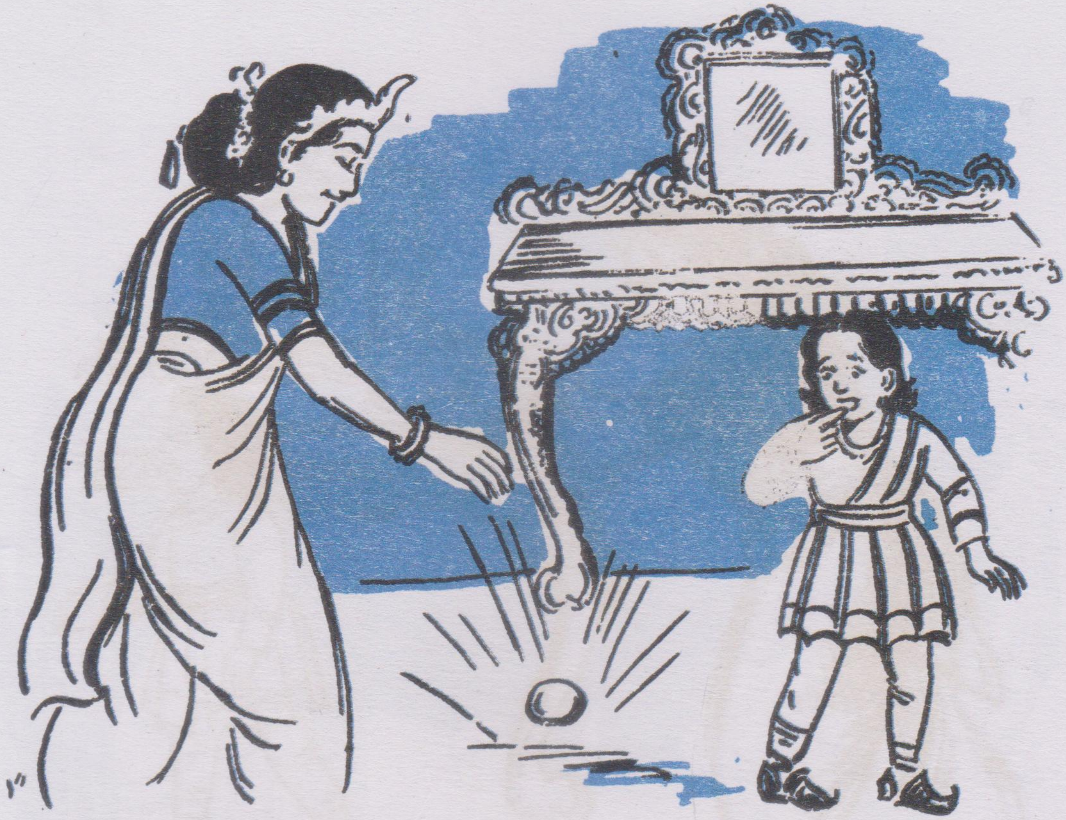
पता न चला। रानी दिन-भर राजकुमार की याद करती रही, उसके बारे में सोचती रही।

दूसरे दिन उसने अपनी दासी को बुलाया। बोली, "मैं एक काम से बाहर जा रही हूं। थोड़ी देर में लौटूंगी। तू इस कमरे में मत आना, और भी कोई न आने पावे। अच्छा!"



पर रानी को बाहर कहां जाना था! वह वहीं कमरे में छिप गई और चुपचाप देखने लगी कि सुनसान हो जाने पर क्या होता है। थोड़ी देर में हुआ क्या कि रानी को वहां न देखकर राजकुमार बाहर आ गया और खेलने लगा। उसकी निगाह रानी पर नहीं पड़ी, पर रानी ने देख लिया कि वह हीरे में से निकला है।

राजकुमार मौज से खेलने लगा। रानी का दिल आनन्द से कूदने



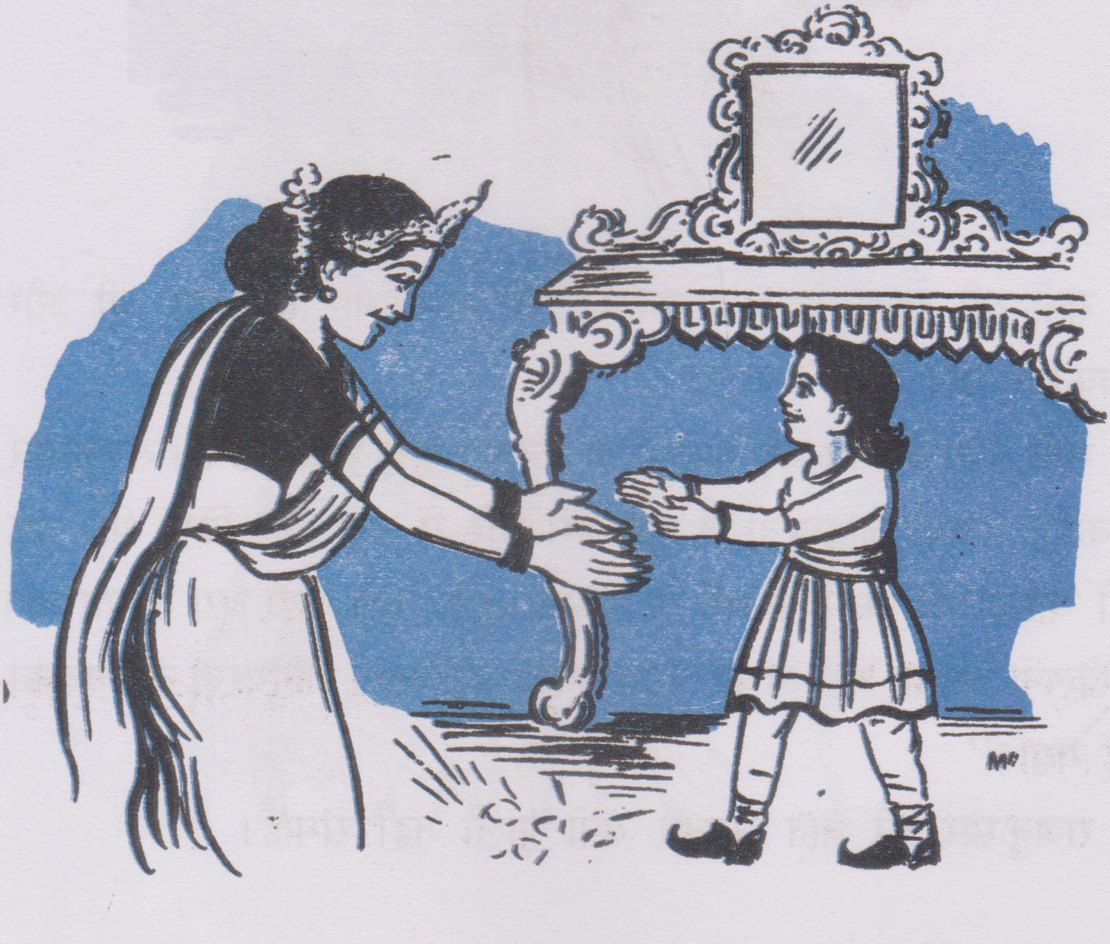
लगा। वह थोड़ी देर तक चुपचाप खड़ी रही। फिर राजकुमार की आंख बचाकर हीरे की ओर बढ़ी। वह हीरे को अपने हाथ में ले लेना चाहती थी। उस पर अपना काबू कर लेना चाहती थी। पास जाकर उसने हीरे की तरफ हाथ बढ़ाया।

घबराहट के मारे रानी के हाथ कांप रहे थे। उसका हाथ लगते ही हीरा जमीन पर गिर पड़ा। उसके गिरने की आवाज सुनकर राजकुमार ने मुड़कर देखा। हीरा मेज पर नहीं था। वह नीचे पड़ा था। राजकुमार

हैरान हुआ—अब वह क्या करे! किसमें समावे! रानी उसके सामने खड़ी थी।

राजकुमार थोड़ी देर तक खड़ा-खड़ा देखता रहा, पर अब बचने का कोई उपाय ही नहीं था।

राजकुमार ने रानी की ओर देखा। रानी ने राजकुमार की ओर देखा। रानी बड़ी अच्छी थी। राजकुमार बहुत प्यारा था। दोनों बड़े प्रसन्न हुए। राजकुमार ने अपनी बांहें रानी की ओर फैला दीं।





रानी की खुशी के क्या कहने! उसे राजकुमार की चाह थी और राजकुमार उसे मिल गया था।

रानी ने राजकुमार को गोद में ले लिया। खूब प्यार किया। राजकुमार ने कहा, ''एक जादूगरनी ने मुझे इस हीरे में बन्द कर दिया था। वह नहीं चाहती थी कि मैं किसी के सामने जाऊं। मुझे बड़ा बुरा लगता था। मैं खेलना चाहता था। अच्छा हुआ, हीरा फूट गया। जादूगरनी का चक्कर छूट गया।''

राजकुमार की बात सुनकर रानी फूली नहीं समाई।

रानी राजकुमार को लेकर राजा के पास गई। उसने सारा हाल राजा से कह सुनाया। राजा को बड़ा हर्ष हुआ। उसने राजकुमार को गोदी में ले लिया। प्यार से उसे दुलराया। उनके लिए वह बड़े आनन्द का दिन था। उनकी इच्छा पूरी हो गई थी। उनकी गद्‌दी को संभालनेवाला मिल गया था।

राजा ने कहा, ''बड़ा होने पर मेरी जगह अब यही गद्दी पर बैठेगा। यही राजपाट चलावेगा।''



जरा–सी देर में यह खबर सारे राज्य में फैल गई। चारों ओर खूब सजावट की गई, खुशियां मनाई गईं।

कुछ दिन बाद राजा ने राजकुमार को गद्दी पर बिठाया। वह राजा बन गया। प्रजा को बड़ी खुशी हुई। राजा–रानी को भी खुशी हुई। सब सुख से रहने लगे।

❑❑❑





सस्ता साहित्य मण्डल

सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन
एन–77, कनॉट सर्कस, नई दिल्ली–110001
दूरभाष : 23310505, 41523565

ISBN 81-7309-190-0
9 788173 091902